Vol 5 Issue 10 Nov 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

भारत में बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम और जोखिम प्रबन्धन

अंजना जैन
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शास. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महा., इन्दौर

सारांश :

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में सुदृढ़ वित्तीय ढ़ांचे का होना उस देश की प्रगति की ओर इंगित करता है। तथा बैंकिंग क्षेत्र एक अर्थव्यवस्था के विकास में अहम भूमिका निभाते हुए सुदृढ़ता प्रदान करता है। बैंक देश के आर्थिक विकास की कुंजी है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि देश में एक सुदृढ़ बैंकिंग क्षेत्र हो। १९९१ से प्रारम्भ हुए उदारीकरण स्वरूप बैंकों को नये उत्पादों तथा सेवाओं को प्रारम्भ कर कई क्रांतिकारी बदलाव अपने प्रबन्ध में करना पड़े। परिणामस्वरूप बैंकिंग व्यवसाय के साथ बैंकिंग आय भी बढ़ी और बैंकिंग क्षेत्र में नवीन जोखिमों का प्रादुर्भाव हुआ। यह सत्य है कि जितनी जोखिम ज्यादा होगी लाभ की सम्भावना भी उतनी ही अधिक होगी और बैंकिंग व्यवसाय में तो लाभ का आधार ही जोखिम में है। अतः बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम को पहचान कर उन्हें समाप्त तो नहीं किया जा सकता पर कम अवश्य किया जा सकता है। इस हेतु समस्त बैंकिंग एवं वित्तीय एक जोखिम प्रबन्ध तंत्र की स्थापना कर स्वयं को भावी अनिश्चताओं एवं जोखिम से बचाने के प्रयास करते रहते हैं जिसे हम जोखिम-प्रबन्धन कहते हैं और संस्था

अंजना जैन

की–वर्ड– बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम एवं प्रबन्धन।

अध्ययन का उद्देश्य :–

(१)बैंकिंग संस्थाओं की जोखिम के प्रकारों का अध्ययन करना।
(२)बैंकिंग संस्थाओं की जोखिम को न्यूनतम करने वाले कार्यों का अध्ययन करना।
(३)बैंकिंग संस्थाओं की जोखिम को नियन्त्रित करने वाले उपायों को जानना।

आंकड़ों व तथ्यों का संकलन :– प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक व द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। जिसमें संकलन बैंक अधिकारियों कर्मचारियों से समूह चर्चा, दूरभाष पर चर्चा कर जानकारी एकत्र की गई है। द्वितीयक तथ्यों का संकलन पुस्तकों, पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, शोध जर्नल व इन्टरनेट से जानकारी एकत्र की गई है।

अध्ययन से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण : प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से उद्देश्यों के अनुसार भारत में बैंकिंग संस्थाओं व कारोबार में जोखिम के प्रकार, जोखिम के तरिकों आदि का वर्गीकरण व विश्लेषण किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन : बैंकिंग व्यवसाय में एशियाई वित्तीय संकट जो जुलाई १९९७ में शुरू हुआ दुनियाभर में आर्थिक मंदी के रूप में परिणीत हुआ।.१ यह संकट थाईलैण्ड से शुरू हुआ जिनके वित्तीय कर्ज ने उसे दिवालिया बना दिया। जिसका परिणाम विश्व के कई देशों पर मुद्रा अवमूल्यन, निजी ऋणों में तेज वृद्धि। मुद्रा संकट के रूप में देखा गया।.[२]

भारत में बैंकिंग कारोबार में जोखिम – बैंक जोखिम प्रबन्धन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें संस्था अपनी व्यवसायिक व वित्तीय गतिविधियों से जुड़ी जोखिमों को पहचानने, उसके सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव का आकलन करने के साथ उन्हें कम या नियन्त्रित करने हेतु कार्यविधियों का निर्माण करने से है ताकि भावी विकास का पथ अग्रसर हो सके।[२]

पोस्टल एलपीजी की अवधि में घरेलू बैंकों के साथ विदेशी बैंकों की मध्यस्थहीनता के कारण कड़ी प्रतिस्पर्धा को देखा गया।.[३] बैंकिंग कारोबार को बढ़ाने के लिए एटीएम, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, मोबाईल बैंकिंग, इन्टरनेट बैंकिंग, ई एफ.डी.,

म्यूचुअल फंड, ऑनल लाईन अनेक सुविधाएं प्रदान की गई। इस तकनीकि नवाचार ने बैंकिंग कारोबार को जहाँ सुलभ बनाया वहीं बैंकिंग कारोबार में जोखिम में भी काफी वृद्धि हुई।

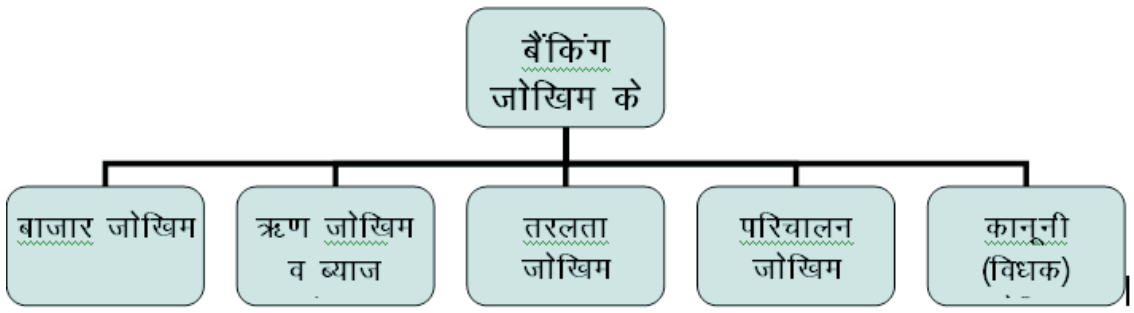

(1)बाजार जोखिम – बाजार जोखिम वर्तमान तथा भावी आय तथा अंशधारकों के अंशों पर पड़ने वाले प्रतिकुल ब्याज दरों तथा कीमतों के कारण उत्पन्न होती है। इसके दो प्रकार है –
(अ)विदेशी मुद्रा जोखिम – जो विनिमय दरों में और उत्पाद कीमत के घटने-बढ़ने के कारण उत्पन्न होती है।
(ब)बाजार में तरलता जोखिम - जो उत्पाद कीमतों के घटने बढ़ने, लाभप्रदता या परिसम्पतियों के मूल्य में परिवर्तन के कारण अनिश्चिता का वातावरण उत्पन्न करते है।

(2)ऋण जोखिम – ऋण सम्बन्धित जोखिम का मूल कारण ऋणी द्वारा समय पर मूलधन व ब्याज का भुगतान स्वीकार्य शर्तों के अनुसार पूरा न कर पाने के कारण, ग्राहकों की आर्थिक स्थिति बदल जाने के कारण उत्पन्न होती है। चूंकि बैंकिंग संस्थाओं का मूल कार्य ग्राहकों को ऋण उपलब्ध करवाना है अतः ऋण जोखिम का उचित प्रबन्धन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

(3)तरलता जोखिम – तरलता जोखिम बैंक की आस्तियों तथा देयताओं में असन्तुलन के कारण उत्पन्न होती है। तरलता जोखिम प्रबन्धन के अन्तर्गत बैंक द्वारा अपनी समस्त देयताओं को समय पर भुगतान करना तथा निवेश के अवसरों पर धन उपलब्ध करवाना महत्वपूर्ण कार्य माना जा सकता है।

(4)परिचालन जोखिम – बासेल समिति के अनुसार – अपर्याप्त व विफल आन्तरिक क्रिया कलापों, प्रणालियों अथवा ब्राह्य गतिविधियों के कारण उत्पन्न हानियों की जोखिम ही परिचालन जोखिमे है।[४] और इन जोखिमों के उत्पन्न होने के मूल कारण – अपर्याप्त सूचना तंत्र, आन्तरिक नियन्त्रणीय, धोखाधड़ी, चौरी, विफलता, अवांछनीय गतिविधियों के कारण उत्पन्न होती है।

(5)कानूनी जोखिम – बैंकिंग क्षेत्र एक अत्यधिक नियामक वातावरण में कार्य करता है तथा अपनी प्रत्येक गतिविधि के लिए उसका न्याय संगत होना कानूनी दुष्टि से आवश्यक होता है।[४] अतः जोखिमों से बैंक अपनी समस्त गतिविधियों चाहे वे जमाओं से सम्बन्धित हो या ऋणों से सम्बन्धित हो सम्पूर्ण विवरण समस्त सम्बन्धित पक्षों को उपलब्ध करवाना अनिवार्य है।

(6)अन्य जोखिम – दो भागों में विभक्त किया जा सकता है
(अ)सामाजिक जोखिम – जो गलत व्यापार निर्णयों के कारण निर्णयों में कमी के कारण या अनुचित कार्यान्वयन के कारण और उद्योग की स्थिति में परिवर्तन के कारण संगठन की रणनीति में परिवर्तन के कारण व प्रबन्धन में गुणवत्ता की कमी के कारण बैंकिंग कारोबार में जोखिम उत्पन्न होती है।
(ब)प्रतिष्ठा जोखिम – प्रतिष्ठा जोखिम ग्राहकों पर बैंकिंग व्यवहार की अविश्वनीयता, मुकदमेबाजी व बैंकिंग कर्मचारियों के नकारात्मक व्यवहार के कारण जोखिम उत्पन्न होती है।

बैंकिंग कारोबार में जोखिम को न्यूनतम व नियन्त्रित करने वाले उपाय – सामान्यतः बैंकिंग संस्थाओं में जोखिम का कुशल प्रबन्धन ही बैंकिंग संस्था की सफलता का आधार है।

(1) बाजार जोखिम प्रबन्धन

- ६ वर्तमान तथा भावी कारणों व स्थितियों का आकलन कर निवेश गतिविधियों का संचालन करना।
- ६ कुशल प्रबन्धकों, वित्तीय विशेषज्ञों, अनुभवी व्यक्तियों से समय-समय पर परामर्श लेकर नीतियों का निर्धारण करना।
- ६ जोखिम व क्षमता का आकलन कर बैंकों को अपनी तुलनात्मक भावी रणनीति तैयार करना चाहिए।

(2)ऋण जोखिम प्रबन्धन

- ◆ ग्राहकों की साख एवं कार्यकुशलता के स्तर का पूर्ण आकलन करना।
- ◆ संस्था के वित्तीय व्यवहारों का आकलन करना।
- ◆ ग्राहकों की वित्तीय, वित्तीय विवरणों का गहन अवलोकन व विश्लेषण करना।
- ◆ बैंक ऋण न डुबे इसलिए जोखिम आकलन व विश्लेषण की सुदृढ़ प्रणाली का विकास करना।

◆ बैंक द्वारा उपलब्ध करवाये गये ऋणों की निगरानी व नियन्त्रण हेतु तंत्र की स्थापना करना।

(3)तरलता जोखिम –

- ◆ बैंकों को अपनी तरलता स्थिति पर सूक्ष्म नज़र रखते हुए भावी असन्तुलन से बचने हेतु पूर्व में तरलता की व्यवस्था कर लेना।
- ◆ बैंक द्वारा प्रतिमाह जमाओं व भुगतानों की समीक्षा कर असन्तुलन के वित्तीय आंकड़े तैयार करना।
- ◆ तरलता प्राप्ति हेतु केन्द्रीय बैंक व अन्य बैंक से पुनर्वित्त की पूर्व व्यवस्था का आश्वासन लेना।
- ◆ उच्च तरलता प्रतिभूतियों में निवेश करना ताकि आवश्यकता होने पर इन्हें बेच कर तुरन्त तरलता प्राप्त की जा सके।

(4)परिचालन जोखिम प्रबन्धन –

- ◆ आन्तरिक नियन्त्रण व्यवस्था को सुदृढ़ करना।
- ◆ समस्त वित्तीय गतिविधियों के संकलन हेतु एक केन्द्रीय समंक संग्रहण स्थल व प्रशिक्षण स्थल का निर्माण करना।
- ◆ बैंक द्वारा स्पष्ट नीतियों का निर्माण व नियन्त्रण करना।

◆ उन्नत व सुरक्षित सॉफ्टवेयर का प्रयोग बढ़ाना।

(5)कानूनी जोखिम प्रबन्धन –

◆ जमाकर्ताओं व ऋणों से सम्बन्धित कानूनी शर्तों, नियमों व दस्तावेजों के प्रति पूर्व में ही उपलब्ध करवाना ताकि कानूनी समस्याएं बैंकों के समक्ष भविष्य में उपलब्ध न हो।

(6)अन्य जोखिम प्रबन्धन –

◆ कुशल अनुभवी परामर्शदाताओं से समय पर सलाह लेकर उन्नत तकनीकि व गुणवत्ता का प्रयोग करना।

निष्कर्ष : वर्तमान में बैंक जोखिम व उससे निपटने के लिए प्रभावी ढ़ंग से जोखिम प्रबन्ध की रणनीति तैयार कर रहे है। इसलिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा साईड व ऑफ साईड की निगरानी के तरिकों को लागू किया जा रहा है। जोखिमों का पता लगाने, इनको मापने व जोखिमों को नियन्त्रित करते व कम करते हुए अपने बैंकिंग व्यवसाय को उन्नति के पथ पर ले जाया जा सकता है। वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में कार्यकुशलता ही संस्था के विकास का आधार होती है। अतः जोखिम प्रबन्धन के महत्वपूर्ण कार्य को सुक्ष्मता व गहनता के साथ लागू करना चाहिए ताकि बैंकिंग व्यवसाय नये विकास को प्राप्त कर सके।

सन्दर्भ सूची :

1-Thirupathi K and Kumar M – Risk Management in Banking Sector Marketting Financial Services 2013, Vol. No. 2, P.No. 2277.

2-Seethapathi K - Risk Management in Bank ICFAI Pressas Hyderabad 2002, P.No. 129.

3-Seethapathi K - Risk Management in Bank ICFAI Pressas Hyderabad 2002, P.No. 129.

4-Altman E – “Financial ratios_discriminant analysis and the prediction of Coroperate Bankruptcy”. Journal of Finance 968, P.No. 589-609.

5-Berathi V – बैंकिंग व्यवसाय में जोखिम प्रबन्धन शोध समीक्षा – जयपुर प्रकाशन २००६, पृ.क्र ६३०.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org